

# डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 22, यिर्मयाह 27-29, भविष्यवाणी संघर्ष

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 22, यिर्मयाह 27-29, भविष्यवाणी संघर्ष है।

इस सत्र में हमारा ध्यान यिर्मयाह 27 से 29 पर रहने वाला है।

हम विशेष रूप से भविष्यसूचक संघर्ष के विषय से निपट रहे हैं। हमने यिर्मयाह 23 के अपने अध्ययन में इस मुद्दे को उठाया, एक सच्चे भविष्यवक्ता के गुण और विशेषताएं जो व्यवस्थाविवरण 18 में बताई गई हैं। यिर्मयाह और उसके मंत्रालय का संघर्ष झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ था जो लोगों से शांति का वादा कर रहे थे और लोगों को शांति दे रहे थे। उनके संदेश और निर्णय की चेतावनियों को नजरअंदाज करने का कारण और युक्तिकरण।

भविष्यसूचक संघर्ष का मुद्दा अध्याय 27 से 29 में भी सामने आएगा। मैं इन अंशों को उस संरचना से भी जोड़ना चाहता हूँ जिसके माध्यम से हम काम कर रहे हैं। हमने इस बारे में बात की है कि कैसे अध्याय 26 से 45 प्रभु के वचन की अस्वीकृति की कहानी और इसके पीछे के धार्मिक उद्देश्य को बताता है: यह प्रदर्शित करने के लिए कि यह परमेश्वर के वचन की अस्वीकृति थी जो अंततः निर्वासन के फैसले का कारण बनी।

यह परमेश्वर नहीं था जो अपनी वाचा के दायित्वों को पूरा करने में विफल रहा; यह इज़राइल था जो प्रभु के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने में विफल रहा। हमने इस परिच्छेद के चारों ओर यहोयाकिम ढांचे को भी देखा या देखने का प्रयास किया है।

अध्याय 26 से 35, अध्याय 36 से 45। हमारे पास यहोयाकीम के मंत्रालय के समय की ये चार घटनाएँ और प्रसंग हैं जो एक ग्रिड प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से हम इस कहानी को पढ़ते हैं। यहोयाकीम का समय एक निर्णायक क्षण था जब यहूदा प्रभु से दूर हो गया और जब विद्रोह और परमेश्वर के वचन के प्रति राजा की अस्वीकृति ने अंततः यहूदा का न्याय लाया और उनके भाग्य पर मुहर लगा दी।

हमारे पिछले सत्र में, हमने इस तथ्य के बारे में बात की थी कि लोगों को जीवन का एक प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन प्रत्येक पैनल के अंत में जीवन का वादा केवल एक बहुत छोटे अवशेष को दिया गया है। पैनल एक में, अध्याय 35 में, हमारे पास रेकाबियों से किया गया वादा है, यह अस्पष्ट जनजाति जो अपनी पारिवारिक परंपराओं के प्रति वफादार रही है। इसके परिणामस्वरूप, प्रभु कहते हैं, रेकाबियों को मेरे साम्हने खड़ा होनेवाला एक पुरूष न मिलेगा।

दूसरे पैनल में, हमारे पास बारूक है, जो यिर्मयाह का वफादार मुंशी रहा है। यिर्मयाह एक रोता हुआ भविष्यवक्ता था। बारूक एक रोता हुआ लेखक था क्योंकि वह उन्हीं अनुभवों से गुज़रा था जो यिर्मयाह को हुआ था।

उनकी निष्ठा के कारण, उन्हें राष्ट्रीय निर्णय के संदर्भ में जीवन का वादा किया गया है। लेकिन उन दोनों खंडों के अंत में, जहां आपके पास रे चैबाइट्स का उद्धार और बारूक के लिए जीवन है, आपके पास पूरे राष्ट्र पर एक निर्णय भी है। अध्याय 34 में, यहूदा के लोगों और राजा पर फैसला होने वाला है क्योंकि वे अपने दासों को मोज़ेक कानून के अनुसार रिहा करने की अपनी वाचा से पीछे हट गए हैं।

अध्याय 44 में, मिस्र में बचे हुए लोगों पर न्याय होने वाला है क्योंकि वे अपने मूर्तिपूजक तरीकों को जारी रखे हुए हैं। इसलिए, हमने संरचना के बाहरी हिस्से और फ्रेम को देखा है। अब, हम संरचना के अंदर जाकर देखेंगे और देखेंगे कि वहाँ क्या है।

मैं संरचना के बारे में एक शब्द या एक टिप्पणी करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं यिर्मयाह की पुस्तक की एक निश्चित संरचना प्रस्तुत कर रहा हूँ। ऐसे अन्य विद्वान हैं जो ऐसी संरचनाएँ प्रस्तुत करने जा रहे हैं जो समान रूप से मान्य हो सकती हैं लेकिन कुछ मायनों में भिन्न हैं।

उदाहरण के लिए, मैंने कई अध्ययन देखे हैं जो इस खंड को देखेंगे, और वे संरचना को इस तरह से विभाजित करेंगे। अध्याय 26 से 36, यहोयाकीम द्वारा प्रभु के वचन को अस्वीकार करने की ये कहानियाँ एक समावेश प्रदान करती हैं। वे शायद अध्याय 26 से 36 तक दूसरे खंड को देखेंगे।

फिर अध्याय 37 और उसके बाद, हमारे पास यहूदा के राष्ट्र के रूप में अंतिम दिनों में क्या हुआ, इसकी मोटे तौर पर कालानुक्रमिक कहानी है। इसलिए, कभी-कभी किसी संरचना को समझाने के एक से अधिक तरीके होते हैं। मैं यहाँ जिस संरचना को प्रस्तुत कर रहा हूँ, उसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

यह किताब पढ़ने का सबसे बढ़िया तरीका है। मुझे लगता है कि किताब पढ़ने का यह एक तरीका है जो हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों को समझने में मदद करता है और किताब की वास्तुकला और डिज़ाइन को दर्शाता है। लेकिन अक्सर यह स्पष्ट रूप से कहना मुश्किल होता है कि लेखक के दिमाग में क्या था।

हम बस एक ऐसी संरचना प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं जो मुझे लगता है कि इन सभी के लिए सुसंगतता प्रदान करती है। कभी-कभी, मुझे लगता है कि ये संरचनाएँ तब अधिक प्रभावी ढंग से काम करती हैं जब हम उन्हें सामान्य स्तर पर रखते हैं। जब हम सामान्य समानताओं पर ध्यान देते हैं, तो कई बार हम संरचनाएँ विकसित कर सकते हैं या विद्वानों ने ऐसी संरचनाएँ विकसित की हैं जो इतनी जटिल हैं कि आपको लगभग लगता है कि यिर्मयाह और बारूक के पास इस तरह का काम करने के लिए कंप्यूटर होना चाहिए था।

या फिर यशायाह की किताब ऐसी विचित्र संरचनाओं में रखी गई है कि भविष्यवक्ता के लिए ऐसा करना बहुत मुश्किल होता। तो, मुझे यहां एक संरचना दिखाई देती है जो मुझे लगता है कि कुछ सामान्य पैटर्न और सामान्य डिज़ाइन दिखाती है, और इससे हमें संदेश को समझने में मदद मिलती है जहां हम अनुभागों को 26 से 35 और 36 से 45 में विभाजित करते हैं। अब, पैनल के भीतर, संरचना, इसके बीच में, एक विकल्प है जो यहूदा को एक लोगों और एक राष्ट्र के रूप में

सामना करना पड़ रहा है जो अध्याय 26 से 35 में यहोयाकीम के दिनों में उन्हें दी गई पेशकश से बहुत अलग है।

संरचना के अंदर, हम सिदकिय्याह के समय से अधिक निपट रहे हैं। इसके चारों ओर की रूपरेखा यहोयाकीम के समय, 609 से 597 तक से संबंधित है। संरचना के भीतर, हम मुख्य रूप से सिदकिय्याह के समय से निपट रहे हैं, जिन्होंने 597 से 586 ईसा पूर्व तक शासन किया था।

हम एक राष्ट्र के रूप में यहूदा के अंतिम दिनों को देख रहे हैं। और इसलिए, शुरुआती अध्यायों में यहोयाकीम को जो आशा और संभावना दी गई है, वह यह है कि शायद आप और लोग जवाब देंगे, और आप न्याय से बच सकते हैं। और असली अवसर है जहाँ परमेश्वर की बात सुनने और न्याय से बचने या परमेश्वर की बात न सुनने और उस विनाश और तबाही का अनुभव करने के बीच चुनाव करना है जो परमेश्वर उन पर लाने जा रहा है।

हालाँकि, संरचना के भीतर और ढांचे के भीतर जो चल रहा है वह यह है कि अब यहूदा के सामने जो विकल्प है वह एक महत्वपूर्ण तरीके से बदल गया है। अब सिदकिय्याह और लोगों के पास दो विकल्प हैं: बेबीलोन के सामने समर्पण करना, उनके सामने आत्मसमर्पण करना और न्याय से बचना। देखो, परमेश्वर बेबीलोनियों को अपने न्याय के साधन के रूप में भेज रहा है।

यदि आप उनके सामने आत्मसमर्पण कर देंगे और इसे स्वीकार करेंगे और उनके अधीन हो जाएंगे और परमेश्वर की ओर लौट आएंगे, तो परमेश्वर आपको बचा लेगा। यदि आप अपना प्रतिरोध जारी रखते हैं, यदि आप अपने पाप में लगे रहते हैं, यदि आप मानते हैं कि आप सैन्य रूप से परमेश्वर के न्याय से बचने का कोई रास्ता निकाल सकते हैं, तो यह अंततः पूर्ण विनाश की ओर ले जाएगा। इसलिए, यहोयाकीम के लिए विकल्प परमेश्वर का मार्ग चुनना और न्याय से बचना है।

सिदकिय्याह और लोगों के सामने एक विकल्प है कि वे परमेश्वर का मार्ग चुनें या पूरी तरह से नष्ट हो जाएँ। अध्याय 27 से 29 में, हमें सिदकिय्याह के शासनकाल के दौरान चल रहे भविष्यसूचक संघर्ष का प्रतिबिंब मिलता है जो इस मुद्दे से निपटता है: हम बेबीलोनियों के साथ क्या करें? या परमेश्वर हमसे क्या सोचना चाहेगा या बेबीलोन के संकट पर हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? याद रखें, यिर्मयाह का दृष्टिकोण यह है कि यहूदा ने वाचा का उल्लंघन किया है; वे प्रभु के प्रति वफादार नहीं रहे हैं; वाचा के अभिशापों में से एक जिसे परमेश्वर ने चेतावनी दी थी कि वह अपने लोगों के खिलाफ लाएगा वह सैन्य आक्रमण और निर्वासन का वाचा अभिशाप था। यिर्मयाह लोगों को चेतावनी दे रहा है कि परमेश्वर बेबीलोनियों को अपने न्याय के साधन के रूप में उपयोग कर रहा है।

यह सब उस वाचा के अनुसार हो रहा है जो परमेश्वर ने मूसा के दिनों में निर्धारित की थी। यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं और अपने पापपूर्ण तरीकों से नहीं हटते हैं, तो भगवान उन पर विनाश लाने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग करने जा रहे हैं। हालाँकि, वे इसे देखते हैं, या फिर वे इस पर प्रतिक्रिया देते हैं; यदि वे बाबुल के अधीन नहीं होंगे, तो वे पूरी तरह से नष्ट हो जाएंगे।

इस समय उनके लिए बेबीलोन की अधीनता में शामिल होने का कोई रास्ता नहीं है। परमेश्वर ने बेबीलोनियों को राष्ट्रों पर प्रभुत्व दिया है, और उस प्रभुत्व में यहूदा राष्ट्र भी शामिल है। जिन भविष्यवक्ताओं ने यिर्मयाह का विरोध किया, उनकी वाचा की समझ मौलिक रूप से भिन्न थी।

उनका मानना है कि ईश्वर ने इस्राएल को अपने खास लोगों के रूप में चुना है, इसलिए ईश्वर का उन्हें आशीर्वाद देना अनिवार्य है और चाहे कुछ भी हो जाए, ईश्वर उनकी रक्षा करेगा। यिर्मयाह चेतावनी दे रहा है कि बेबीलोन की सेना आ रही है और निर्वासन की ये लहरें जो आप अनुभव कर रहे हैं, वे और भी बदतर होती जा रही हैं। यिर्मयाह उन्हें बताने जा रहा है कि निर्वासन 70 साल तक चलने वाला है।

निर्वासन में ले जाए जाने वाले लोगों को वहाँ बसना होगा और घर बनाना होगा, विवाह करना होगा और परिवार बढ़ाना होगा, बेबीलोन के राजा के अधीन रहना होगा और बेबीलोन की शांति के लिए प्रार्थना करनी होगी क्योंकि वे कुछ समय के लिए वहाँ रहने वाले हैं। झूठे भविष्यद्वक्ता, वाचा के अपने दोषपूर्ण दृष्टिकोण के आधार पर, मानते हैं कि परमेश्वर उन्हें कुछ वर्षों के भीतर बचा लेगा। यह संकट जल्द ही खत्म हो जाएगा।

और इसलिए, हमारे पास 27-29 में बहस और चर्चा है, हम बेबीलोन संकट के बारे में क्या करते हैं? यिर्मयाह कह रहा है कि बाबुल के अधीन हो जाओ, और भविष्यद्वक्ता कुछ और कह रहे हैं। अब यह अध्याय 37-39 में दूसरे पैनल में समान है क्योंकि, फिर से, हम सिदकिय्याह के दिनों में हैं, यह यरूशलेम के पतन से पहले के आखिरी दिन हैं, लेकिन अब यह अधिक राजनीतिक और सैन्य अधिकारी इस बात पर बहस कर रहे हैं कि क्या करना है हम बेबीलोन के बारे में करते हैं। दूसरे पैनल में, यिर्मयाह वही बात कहने जा रहा है: बाबुल के अधीन हो जाओ और बच जाओ। हमारे पास अधिकारी और सैन्य नेता हैं जिन्होंने भविष्यवक्ताओं के दोषपूर्ण वादों को सुना है, और वे प्रतिरोध जारी रखे हुए हैं।

तो, दो पैनलों में समानता यह है कि हम क्या करें? बेबीलोन के अधीन होने के मुद्दे के बारे में क्या, जो 27-29, 37-39 में मुख्य ध्यान देने वाला है? हमारे पास यहाँ एक कारण-और-परिणाम संबंध भी है क्योंकि 27-29 में, हमारे पास दो भविष्यसूचक संदेश हैं। क्या हम यिर्मयाह पर विश्वास करते हैं? क्या हम बेबीलोन के अधीन होते हैं, और क्या हम अपने तरीके बदलते हैं, या क्या हम शांति के भविष्यवक्ताओं के झूठे वादों पर विश्वास करते हैं, और क्या हम प्रतिरोध जारी रखते हैं? इसका परिणाम यह है कि यरूशलेम नष्ट होने जा रहा है, और हमें अध्याय 37-39 में इसका रिकॉर्ड मिलता है।

तो, एक अर्थ में, 27-29 और 37-39 के बीच एक चेतावनी और पूर्ति की समानता भी है। ठीक है, लेकिन अब जब हम वापस जाते हैं और अध्याय 27-29 को विशेष रूप से देखते हैं, तो मैं चाहूंगा कि हम भविष्यवाणी संघर्ष के तीन विशिष्ट उदाहरणों पर ध्यान दें जो यिर्मयाह को सहना होगा और बेबीलोन के अधीन होने के इस संदेश के कारण उससे गुजरना होगा। और याद रखें, लोग वे हैं जो यहाँ बीच में हैं; अधिकारी और राजा भी हैं।

हम कैसे प्रतिक्रिया दें? हम किस पर विश्वास करें? यह एक गंभीर बात है। वास्तव में यहूदा के जीवन और राष्ट्र का भाग्य अंततः इस बात से निर्धारित होने वाला है कि वे इस संदेश पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। हमें धर्मशास्त्र के महत्व के बारे में व्यावहारिक स्तर पर ही याद दिलाया जाता है।

हम ईश्वर के बारे में क्या मानते हैं और ईश्वर के बारे में हमारे जो विचार हैं, वे अंततः जीवन में हमारे द्वारा लिए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों और कार्यों को निर्धारित करते हैं। शांति के भविष्यवक्ताओं का धर्मशास्त्र और भविष्यवक्ता यिर्मयाह का धर्मशास्त्र हमें वास्तविकता की दो बहुत अलग समझ देते हैं, और लोग उन धर्मशास्त्रों के आधार पर कैसे कार्य करते हैं, यह अंततः यहूदा के भाग्य का निर्धारण करने वाला है। इसलिए आज, जब लोग कहते हैं, आप जानते हैं, हमें धर्मशास्त्र के बारे में अपनी बहस छोड़ देनी चाहिए, यह वैसे भी महत्वपूर्ण नहीं है, आइए हम केवल इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि ईसाई होने का क्या मतलब है।

मुझे लगता है कि वे किसी ऐसी चीज़ के महत्व को कम आंक रहे हैं जो बहुत वास्तविक है, जिस तरह से हमारा धर्मशास्त्र अंततः हमारे व्यवहार को निर्धारित करता है। तो यहाँ उस धर्मशास्त्र के बारे में बहस है जो अध्याय 27-29 में चल रही है। यह हमें अध्याय 27, श्लोक 1 में बताता है, यह कहता है, "...सिदकिय्याह के शासनकाल की शुरुआत में।" ठीक है, तो याद रखें कि सिदकिय्याह 609 ईसा पूर्व में सिंहासन पर आता है, लेकिन यह हमें अध्याय 28 में यह भी बताता है कि वहाँ जो कहानी होती है वह उसी वर्ष होती है जिस वर्ष 27 में घटनाएँ होती हैं।

और वहाँ लिखा है, "...उसी वर्ष यहूदा के राजा सिदकिय्याह के शासनकाल की शुरुआत में, चौथे वर्ष के पाँचवें महीने में।" और इसलिए, सिदकिय्याह के शासनकाल का चौथा वर्ष 593 ईसा पूर्व है। तो यही समय है। अध्याय 27 और 28 में जो कुछ हम देखने जा रहे हैं, उसके लिए यही कालानुक्रमिक संदर्भ है। अब अध्याय 27 की शुरुआती आयत, आयत 1 के बारे में कुछ और है, जिस पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता था।

ईएसवी और अधिकांश अंग्रेजी बाइबिल में, यह कहा जा रहा है, "... सिदकिय्याह के शासनकाल की शुरुआत में।" यही वह शीर्षक है जो इस अनुभाग के लिए प्रदान किया गया है। हिब्रू संस्करण में कहा गया है, "...यहोयाकिम के शासनकाल की शुरुआत में।" तो, हमने यहोयाकिम फ्रेम और इस तथ्य के बारे में बात की है कि 26, 36 और 45 में यहोयाकिम के बारे में केवल अंश हैं। दरअसल, हिब्रू पाठ में, हमारे पास 27.1 में यहोयाकिम का संदर्भ है। यूनानी पाठ में हमारे पास कोई शीर्षक ही नहीं है।

लेकिन जब हम इस कहानी में घटित घटनाओं को देखते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो सिदकिय्याह के शासनकाल का है। और इसलिए, एमटी में संदर्भ, शीर्षक जो कहता है, "...यहोयाकिम के शासनकाल में," यह एक शीर्षक है जिसे बाद में जोड़ा गया है। और मुझे लगता है कि सिदकिय्याह को पढ़ने के लिए जेहोयाकिम को संशोधित करने में अंग्रेजी संस्करण सही हैं।

यह हमारे ढांचे को अक्षुण्ण रखता है। लेकिन इसका समय 593 है। यहां जो हो रहा है वह यह है कि विभिन्न देशों के राजदूतों का एक प्रतिनिधिमंडल, यहूदा को घेरने वाले राष्ट्र राज्यों, सिदकिय्याह के साथ एक सम्मेलन के लिए यरूशलेम आया है।

यह सम्मेलन इस बारे में है कि इन छोटे राष्ट्रों को यह एहसास हो कि अकेले और अकेले वे बेबीलोन की सेना की ताकत का सामना करने में सक्षम नहीं होंगे। ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि वे बेबीलोन के आक्रमण का विरोध करने में सक्षम हों। और इसलिए, उन्होंने जो करने का फैसला किया है वह एक गठबंधन में शामिल होने का है।

और यदि हम अपनी सेनाओं को एक साथ खींचते हैं, तो हमने पिछली शताब्दी में असीरियन संकट के दौरान यहूदा और राष्ट्र-राज्यों के साथ भी यही होता देखा था। यदि हम किसी गठबंधन के साथ आ सकते हैं, तो शायद हम ब्लॉक पर बड़े धमकाने वालों के सामने खड़े हो सकते हैं। और इसलिए वे बेबीलोनियों के विरुद्ध विद्रोह की संभावना पर विचार कर रहे हैं।

यिर्मयाह इस बारे में क्या सोचता है? खैर, यिर्मयाह का संदेश यह है कि परमेश्वर ने आदेश दिया है कि बेबीलोन के लोग राष्ट्रों पर नियंत्रण करेंगे। उनके खिलाफ किसी भी तरह का प्रतिरोध व्यर्थ है। यह सिर्फ एक राजनीतिक आकलन नहीं है।

यह सिर्फ इतना ही नहीं है, ठीक है, मैं हमारी सेनाओं के आकार बनाम उनकी सेनाओं के आकार को देख रहा हूँ। यह यिर्मयाह की समझ पर आधारित एक धार्मिक मूल्यांकन है कि परमेश्वर ने उसे क्या बताया है कि बेबीलोनवासी परमेश्वर के न्याय के साधन हैं। असीरियन संकट के दौरान, यशायाह ने कहा कि असीरियन परमेश्वर के क्रोध की छड़ी थे।

यिर्मयाह कहेगा कि नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक है। इसलिए, उसका विरोध करना, उसका सामना करना काम नहीं आने वाला है। यह सम्मेलन जो आप कर रहे हैं, जहाँ आप इस राजनीतिक स्थिति या इस राजनीतिक समाधान की योजना बना रहे हैं और उसे एक साथ रख रहे हैं, काम नहीं आने वाला है।

हमने यिर्मयाह अध्याय 51, श्लोक 59 में यह भी पढ़ा कि सिदकिय्याह को वास्तव में 593 में बेबीलोन जाना पड़ा। उसे वापस भेज दिया गया, लेकिन उसे सिंहासन पर बने रहने की अनुमति दी गई।

लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि क्या नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों ने इस सम्मेलन के बारे में नहीं सुना है और वे सिदकिय्याह से रिपोर्ट करना चाहते हैं, जहाँ सिदकिय्याह उन्हें अपनी निरंतर वफादारी और इस तथ्य की पुष्टि कर रहा है कि वह उन्हें श्रद्धांजलि देने जा रहा है। बेबीलोनियाई वे लोग थे जिन्होंने 597 में सिदकिय्याह को यहूदा के राजा के रूप में स्थापित किया था जब उन्होंने यरूशलेम शहर पर कब्जा कर लिया था और यहोयाकीन को छीन लिया था। और उन्होंने सिदकिय्याह को अपनी कठपुतली के रूप में खड़ा किया था।

सिदकिय्याह को तब तक राजगद्दी पर बने रहने दिया जाएगा जब तक वह बेबीलोनियों के प्रति वफादार रहेगा और कर अदा करेगा। एक नेता के रूप में अपनी कमज़ोरी के कारण

सिदकिय्याह के साथ जो होता है वह यह है कि सिदकिय्याह को आगे-पीछे खींचा जा रहा है। क्या हम बेबीलोनियों का विरोध करना जारी रखेंगे, या मैं उनके सामने झुक जाऊँ? सिदकिय्याह अपने सैन्य अधिकारियों की बात सुन रहा है जो कहते हैं, तुम्हें पता है क्या? हमारे पास एक मौका है। अगर हम अपनी सेना को एक साथ लाते हैं, अगर हम सही रणनीति के साथ आते हैं, अगर हम सही गठबंधन बनाते हैं, तो हम बेबीलोनियों का सामना कर सकते हैं।

यिर्मयाह कह रहा है, तुम्हारे पास कोई मौका नहीं है। परमेश्वर ने राष्ट्रों को नबूकदनेस्सर के अधीन करने का आदेश दिया है, और उसके खिलाफ किसी भी तरह का प्रतिरोध व्यर्थ है। और यिर्मयाह अध्याय 27 में सिदकिय्याह और इन अन्य प्रतिनिधियों को यह संदेश देने जा रहा है।

पहले लोग, और वह इस संदेश को तीन बार दोहराने जा रहा है, बेबीलोन का प्रतिरोध व्यर्थ है। आइए श्लोक 3 को देखें। एदोम के राजा, मोआब के राजा, अम्मोन के बेटों के राजा, सोर के राजा और सीदोन के राजा को यरूशलेम आए दूतों के हाथों संदेश भेजें। ठीक है, मेरे पास सभी राष्ट्रों के लिए एक संदेश है।

और यहाँ वह श्लोक 5 में क्या कहता है। प्रभु कहते हैं, यह मैं ही हूँ जिसने अपनी महान शक्ति और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से पृथ्वी को बनाया है, और पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों और पशुओं को भी बनाया है। और मैं इसे जिसे उचित समझता हूँ उसे देता हूँ। अब मैंने इन सभी को अपने सेवक बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में दे दिया है, और मैंने उसे उसकी सेवा करने के लिए जंगली जानवर भी दिए हैं।

देखो, प्रभु कहते हैं, मैं दुनिया का निर्माता हूँ। मैं पृथ्वी का मालिक हूँ। मैं सिर्फ़ इस्राएल का परमेश्वर नहीं हूँ; मैं सभी राष्ट्रों का परमेश्वर हूँ।

मैंने प्रभुता सम्पन्न प्रभु और सृष्टिकर्ता के रूप में जो इन बातों को निर्धारित करता है, यह आदेश दिया है कि नबूकदनेस्सर को राष्ट्रों पर शासन करना चाहिए। हमने पहले भी इस पाठ्यक्रम में इसका उल्लेख किया है, लेकिन नबूकदनेस्सर को न केवल राष्ट्रों बल्कि जानवरों पर भी नियंत्रण देकर, नबूकदनेस्सर को एक अर्थ में दूसरे आदम के रूप में चित्रित किया जा रहा है जो परमेश्वर का उप-शासक है, जो परमेश्वर की छवि है। नबूकदनेस्सर परमेश्वर की छवि है।

नबूकदनेस्सर का विरोध करना ईश्वर का विरोध करना है। ठीक है, तो यह राजनीतिक गठबंधन काम नहीं करेगा। इसलिए, यहाँ राष्ट्रों के लिए एक चेतावनी है।

पद 8. यदि कोई जाति वा कोई राज्य इस बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा न करे, और अपनी गर्दन बाबुल के राजा के जूए के नीचे न डाले, तो मैं उस जाति को तलवार, अकाल, और मरी से दण्ड दूंगा, यहोवा की यही वाणी है।, जब तक मैं उनका उपभोग नहीं कर लेता। और याद रखें, यही वह समय है जब यिर्मयाह ने अपनी गर्दन पर जूआ पहन रखा है, यह लकड़ी का जूआ जो अधीनता के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। वह केवल इसका उपदेश नहीं दे रहा है, और वह इसे प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित भी कर रहा है।

ठीक है, अब वह राष्ट्रों और इन दूतों को एक विशिष्ट चेतावनी देने जा रहा है। वह कहता है, अपने भविष्यद्वक्ताओं की बातें मत सुनो जो तुम से कह रहे हैं कि तुम बेबीलोन के आधिपत्य का विरोध कर सकते हो। यह नहीं होगा।

और इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं की मत सुनो। दिलचस्प बात यह है कि जब यिर्मयाह श्लोक 10 में दूसरे श्रोताओं को यह संदेश देता है, तो वह उन लोगों की बात सुनता है जिन्हें वह वहां संबोधित करता है। मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह से भी इसी प्रकार बात की।

और यह अध्याय यहूदा को अन्य सभी राष्ट्रों के बराबर करने जा रहा है। वे अलग नहीं हैं। उन्होंने शायद विश्वास किया होगा, अरे, विशेष परिस्थितियाँ हैं क्योंकि हम भगवान के लोग हैं, और हम इसमें शामिल हैं।

वही संदेश जो परमेश्वर एदोमियों, मोआबियों, अम्मोनियों, सोर और सीदोन के लोगों को देता है, वही संदेश यहोवा सिदकिय्याह को देने जा रहा है। डेविडिक राजा के रूप में उनकी स्थिति उन्हें बेबीलोनियों के प्रभुत्व से बाहर नहीं रखती है। और वह सिदकिय्याह से कहने वाला है, अपने भविष्यद्वक्ताओं की बातें मत सुनो, बाबुल के अधीन हो जाओ, तुम्हारे बचने की यही एकमात्र आशा है।

अतीत में परमेश्वर ने दाऊद को अपना सेवक बताया है। अध्याय 27, पद 6 में जो हुआ, वह यह है कि नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक है। अध्याय 25 में भी यही बात कही गई है।

यहूदा के पिछले इतिहास में और इस्राएल के पिछले इतिहास में, परमेश्वर ने खुद को दाऊद के घराने के प्रति समर्पित किया है। परमेश्वर का दाऊद के राजा के साथ एक विशेष रिश्ता था। उसने दाऊद के राजा को अपने बेटे के रूप में अपनाया।

और उसने उसे सिंहासन पर बिठाया, और यहोवा इस राजा के बारे में क्या कहेगा, यह मेरा अभिषिक्त है, मैंने इसे चुना है, मैंने अपने राजा को सिय्योन, मेरी पवित्र पहाड़ी पर स्थापित किया है, और सभी राष्ट्रों को उसके अधीन होना चाहिए। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे मुझे जवाब देंगे। इसलिए दाऊद और दाऊद के बेटे परमेश्वर के उप-शासक थे।

ईश्वर के पुत्रों के रूप में, उन्होंने पृथ्वी पर ईश्वर के स्वर्गीय प्रभुत्व और संप्रभुता के सांसारिक प्रतिनिधित्व के रूप में शासन किया। और प्रभु कहते हैं कि अंततः, मैं पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को दे दूँगा, और मैं उन्हें दाऊद के अधिकार में कर दूँगा। यह इस तथ्य के आलोक में एक बहुत ही आश्चर्यजनक कथन है कि इज़राइल की भूमि न्यू जर्सी के आकार के बराबर थी।

लेकिन अंततः, ये राजा राष्ट्रों पर शासन करने वाले हैं। वह व्यवस्था यिर्मयाह के दिनों में बदल गई क्योंकि अब परमेश्वर का सेवक, अब परमेश्वर का उप-शासनकर्ता, नबूकदनेस्सर है। और इसलिए, सिदकिय्याह, यह मत सोचो कि दाऊद का राजा होने और परमेश्वर के साथ यह विशेष संबंध रखने से तुम्हें इससे छूट मिलेगी।



तुम्हें बाबुल के प्रति उतना ही समर्पण करना होगा जितना कि इन सभी अन्य राष्ट्रों को। और यहाँ चेतावनी है, पद 14: उन भविष्यद्वक्ताओं की बातों पर ध्यान न करो जो तुम से कहते हैं, कि तुम्हें बाबुल के राजा के अधीन न होना पड़ेगा, क्योंकि यह झूठ है। यह शेखर है कि वे आपसे भविष्यवाणी कर रहे हैं।

यहोवा की यह वाणी है, मैं ने उन्हें नहीं भेजा, परन्तु वे मेरे नाम से झूठी भविष्यद्वक्ताणी करते हैं, जिस से मैं तुम को इस देश से निकाल दूँगा। यदि आप इस झूठे संदेश को सुनते हैं, यदि आप इस झूठे धर्मशास्त्र को मानते हैं, तो आपके लिए इसके विनाशकारी परिणाम होंगे क्योंकि जीवित रहने का एकमात्र तरीका बेबीलोन के प्रति समर्पण है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह बहुत ही दिलचस्प तरीका है कि भविष्यवक्ता यहूदा को अन्य सभी राष्ट्रों के बराबर रखता है।

ऐसे अन्य भविष्यवक्ता भी होंगे जो बिल्कुल यही काम करेंगे। जब वे इस्राएल और यहूदा के लोगों पर न्याय का उपदेश दे रहे होंगे, तो वे इस्राएल और यहूदा राष्ट्र को नीचा दिखाएंगे और कहेंगे, अरे, तुम खुद राष्ट्रों से बेहतर नहीं हो। ऐसा करने वाले भविष्यवक्ताओं में से एक भविष्यवक्ता आमोस है जो विशेष रूप से प्रभावी तरीके से ऐसा करता है।

और वह ऐसा कई तरीकों से करता है। मैं बस इसका जिक्र जल्दी से करने जा रहा हूँ और फिर यिर्मयाह 27 पर वापस जाऊँगा। लेकिन आमोस ने अपने भविष्यवाणियों की शुरुआत राष्ट्रों के खिलाफ न्याय के भाषणों की एक श्रृंखला के साथ की।

और याद रखें, वह इसराइल के लिए एक भविष्यवक्ता है। और अपने सातवें और अंतिम, या जो अंतिम निर्णय भाषण प्रतीत होता है, मैं यहूदा के खिलाफ एक संदेश है, जो दक्षिण में इसराइल का दुश्मन है। और मैं कल्पना कर सकता हूँ कि इसराइल के लोग इसका जश्न मना रहे होंगे।

यह ऐसा है, हाँ, भगवान, जाओ उन्हें ले आओ। हमारे चारों ओर सभी बुतपरस्त लोगों को इकट्ठा करो। परन्तु आमोस जो आठवाँ वचन देता है वह इस्राएल के विरुद्ध ही एक सन्देश है।

और यह ऐसा है जैसे, वाह, हथौड़ा गिर गया। तथ्य यह है कि वे भगवान के चुने हुए लोग हैं इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें न्याय से छूट प्राप्त है। आमोस 3, पद 1 और 2 में, आमोस कहता है, हे वचन सुनो, हे इस्राएल के लोगो, यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध, और उस सारे कुल के विरुद्ध, जिसे मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूँ, क्या कहा है।

मैं पृथ्वी के सब कुलोंके विषय में केवल तुम ही से जानता हूँ। और इसलिए, आप इसे सुनें। हाँ, यह वहाँ है।

वे विशेष हैं. परमेश्वर उन्हें मिस्र देश से बाहर ले आया। परमेश्वर इस्राएल के लोगों को इस तरह से जानता है जैसे वह पृथ्वी पर किसी अन्य परिवार को नहीं जानता है।

लेकिन सुनिए अमोस क्या कहता है। इसलिये मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म का दण्ड दूँगा। इसलिए, वह यह नहीं कहता कि तुम सारी पृथ्वी पर से चुने हुए हो। इसलिए, मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा, तुम्हारी रक्षा करूँगा और तुम्हारा ध्यान रखूँगा।

नहीं, उस विशेष रिश्ते के कारण, आप अधिक जिम्मेदार हैं। और मैं तुम्हें इसके परिणामस्वरूप दंडित करने जा रहा हूँ। अमोस के अध्याय 3 में, बाद में श्लोक 9 के अंश में, अशदोद के गढ़ों और मिस्र देश के गढ़ों, इन सब विदेशी स्थानों में प्रचार करो, और कहो, सामरिया के पहाड़ों पर इकट्ठे हो जाओ और देखो उसके भीतर और उसके बीच में सभी उत्पीड़ितों के बीच भारी उथल-पुथल मची हुई है।

वे नहीं जानते कि सही काम कैसे किया जाए, प्रभु की यही वाणी है। वे अपने गढ़ में हिंसा और डकैती जमा करते हैं। प्रभु इन सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को सामरिया आने, बैठने और यह देखने के लिए आमंत्रित करते हैं कि शहर में क्या हो रहा है।

और वह इनसे कहता है, क्या तुमने कभी सामरिया और इस्राएल के लोगों जैसा दुष्ट कोई देखा है? इसलिए इस्राएलियों और यहूदा के लोगों ने सोचा, हमें इन सब से छूट मिली हुई है क्योंकि हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने उन्हें अलग कर दिया और कहा, अरे, तुम भी इन सभी लोगों के समान न्याय की सजा के अधीन हो। और यही बात परमेश्वर यहाँ भी सिदकिय्याह से कह रहा है।

अब, तीसरी बार जब यह संदेश दोहराया जाता है, अध्याय 27, श्लोक 16, फिर से, तीन बार भविष्यद्वक्ता इसे कहने जा रहा है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन सुनिए कि इस बार संदेश किसके लिए है।

फिर मैंने पुजारी और सभी लोगों से बात की। अब, संदेश सिर्फ राजा के लिए नहीं है; यह लोगों के लिए है, यह धार्मिक नेताओं के लिए है जो इससे प्रभावित होने जा रहे हैं। और यह कहता है, मत सुनो, श्लोक 17।

मुझे क्षमा करें, पद 16। अपने भविष्यद्वक्ताओं की बातें मत सुनो जो तुम से भविष्यद्वक्ताणी करते हैं। देखो, यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबुल से वापस लाये जायेंगे।

देखो, उनकी बात मत सुनो। वे आपसे झूठ की भविष्यवाणी कर रहे हैं। ठीक है? तो, अध्याय 27 में तीन बार, यिर्मयाह यह बयान देने जा रहा है, बेबीलोनियों के सामने समर्पण करो।

यह व्यर्थ है। उनका सामना करना या इससे बाहर निकलने के लिए संघर्ष करना बेकार है। लेकिन तीन बार इस गलत धारणा के लिए जिम्मेदार कौन हैं? ये पैगम्बर हैं।

ये भविष्यद्वक्ता ही हैं जो शेकर की भविष्यवाणी कर रहे हैं, जो लोगों से वादे कर रहे हैं और प्रभु ने उन्हें नहीं भेजा है। तो फिर से, हम भविष्यवाणी संघर्ष के इस मुद्दे पर वापस आ गए हैं। और आप कल्पना कर सकते हैं कि अंतिम दिनों में यरूशलेम में टॉक रेडियो पर मुख्य विषय यह है कि हम बेबीलोन के संकट के बारे में क्या करें? और हम कल्पना कर सकते हैं कि यिर्मयाह को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया गया और दूसरी तरफ से किसी व्यक्ति को, आप उनकी स्थिति को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, लेकिन यही संघर्ष है जो अध्याय 27 से 29 में चल रहा है।

हम अध्याय 28 में इसके दूसरे उदाहरण पर आते हैं। और मुझे लगता है कि जैसा कि हम पहले भी बात कर चुके हैं, यिर्मयाह का एक झूठे भविष्यवक्ता के साथ संघर्ष का सबसे दिलचस्प उदाहरण है। लेकिन यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि हम न केवल दो अलग-अलग संदेश देखते हैं, बल्कि एक तरह से, मुझे लगता है कि हम उस संघर्ष में शामिल हो जाते हैं जो लोगों को यह निर्धारित करने की कोशिश में था कि इनमें से कौन हमें सच बता रहा है।

यिर्मयाह है, जिसके बारे में भविष्यवाणी की गई है कि प्रतिरोध व्यर्थ है। वह वही है जिसने जूआ पहना हुआ है। दूसरी ओर, हनन्याह है, जो प्रभु के नाम पर बोलता है, जिसे पाठ में एक भविष्यवक्ता के रूप में संदर्भित किया गया है लेकिन जो पूरी तरह से विपरीत संदेश दे रहा है।

और यदि आप उन लोगों में से एक हैं, तो आप हनन्याह का संदेश सुनना चाहेंगे क्योंकि यह बहुत अधिक सकारात्मक है। थोड़ी ही देर में ये सब खत्म होने वाला है। यिर्मयाह कह रहा है कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलेगा।

यदि आप प्रतिरोध जारी रखते हैं, तो आप नष्ट हो जायेंगे। मेरा मतलब है, वे पहले से ही हनन्याह की बात सुनना चाहते हैं। और इसलिए, हमें एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे भविष्यवक्ता को पहचानने में संघर्ष करना पड़ता है।

इस अध्याय में यिर्मयाह के यूनानी अनुवाद में, हम एक दिलचस्प बात देखते हैं। हनन्याह को एक झूठे भविष्यवक्ता, एक छद्म भविष्यवक्ता के रूप में संदर्भित किया गया है। लेकिन यहाँ हिब्रू में मसोरेटिक पाठ में, यिर्मयाह और हनन्याह दोनों को एक ही शब्द से संदर्भित किया गया है।

वे दोनों ही भविष्यवक्ता कहलाते हैं। दरअसल, इस विचार पर ज़ोर देने के लिए एमटी में कई बार भविष्यवक्ता शब्द जोड़ा गया है। हमारे यहाँ दो लोग हैं जो दोनों ही भविष्यवक्ता होने का दावा कर रहे हैं।

और मुझे लगता है कि यह और भी दिलचस्प है कि हमारे पास कुछ आयतें हैं जहाँ दोनों को भविष्यवक्ता के रूप में संदर्भित किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, आयत पाँच में, फिर भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने भविष्यवक्ता हनन्याह से बात की। यह भ्रमित करने वाला है।

पद 15 में, यिर्मयाह नबी ने नबी हनन्याह से कहा। और इसलिए आपको यह शब्द नबी हर जगह मिल गया है, और यह इन दोनों लोगों को संदर्भित करता है। ठीक है, आइए हनन्याह के संदेश को याद करें।

यिर्मयाह बेबीलोन के अधीन होने की घोषणा कर रहा है। उसने लकड़ी का जूआ पहन रखा है। आप विरोध नहीं कर सकते।

परमेश्वर ने राष्ट्रों पर बेबीलोनियों की संप्रभुता का आदेश दिया है। हनन्याह, बहुत आक्रामक तरीके से, ऐसा करने के लिए बहुत अधिक चुटुप्राह की आवश्यकता होती है, लेकिन वह यिर्मयाह के संदेश को बाधित करता है। और वह यिर्मयाह की गर्दन से जूआ उतार देता है।

वह उसे ज़मीन पर पटक देता है। और वह कहता है, सुनो, यिर्मयाह को यह सब गलत लगा है। यह एक दीर्घकालिक समस्या होने के बजाय, दो वर्षों के भीतर, हम छुटकारा पा लेंगे, और इस बेबीलोनियाई संकट के बारे में सब कुछ खत्म हो जाएगा।

और जैसा कि हनन्याह लोगों को अपने संदेश के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा है, कुछ मायनों में वह यिर्मयाह की तुलना में अधिक ठोस प्रदर्शन करता है। और वहाँ यह है, मुझे लगता है कि यहाँ एक कथात्मक चीज़ चल रही है जिसे मैंने भविष्यसूचक दर्पण के रूप में संदर्भित किया है। यिर्मयाह को भविष्यवक्ता कहा जाता है।

हनन्याह को भविष्यद्वक्ता कहा जाता है। यिर्मयाह कहता है, यहोवा यों कहता है। हनन्याह कहता है, यहोवा यों कहता है।

मेरा मतलब है, हनन्याह आगे बढ़कर यह नहीं कहता कि, दोस्तों, मैं एक झूठा भविष्यद्वक्ता हूँ। मैं बाल के नाम पर तुमसे बात कर रहा हूँ। वह कहता है, यहोवा ऐसा कहता है।

यह भी संभव है कि अपने जीवन में कई बार हनन्याह परमेश्वर का सच्चा भविष्यवक्ता रहा हो, और परमेश्वर ने उसके माध्यम से वैध संदेश संप्रेषित किए हों। यिर्मयाह एक संकेत कार्य करता है। वह एक लकड़ी का जूआ पहनता है।

हनन्याह एक संकेत कार्य करता है। वह जूआ तोड़ता है और उसके संबंध में एक संदेश देता है। इसलिए, यह मुश्किल है।

इस सब में तनाव को थोड़ा बढ़ाने वाली बात यह है कि हनन्याह के पास स्वयं एक भविष्यवक्ता के रूप में विश्वसनीयता और साख हो सकती है, लेकिन हनन्याह के पास अपने संदेश को आधार बनाने के लिए एक पुरानी धार्मिक परंपरा भी है। हमने देखा जब हमने सिथ्योन स्तोत्र, भजन 46 में यिर्मयाह के मंदिर उपदेश के बारे में बात की थी। संकट के समय में प्रभु तत्काल सहायता करते हैं, और हम जानते हैं कि सिथ्योन को हिलाया नहीं जाएगा, वह हिलाया नहीं जाएगा, और अगर वहाँ है भी एक तूफान जो पूरी दुनिया को चकनाचूर कर देता है, यरूशलेम एक तूफान आश्रय है।

और भगवान की उपस्थिति, भले ही ये पानी गरज रहा हो, झाग बना रहा हो और उग्र हो, भगवान की उपस्थिति एक शांतिपूर्ण नदी की तरह है जो शहर से होकर बहती है। यह गीहोन के झरने की तरह है जो लोगों के लिए भगवान का आशीर्वाद लाता है। हम नहीं गिरेंगे क्योंकि ईश्वर हमारे साथ है।

सिथ्योन सुरक्षित है, भले ही उस पर दुश्मन सेना द्वारा हमला किया जाए, और भले ही ये राष्ट्र क्रोध करें, दहाड़ें और झाग उड़ाएँ, परमेश्वर हमें बचाएगा। परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा। परमेश्वर ने यरूशलेम शहर की निगरानी करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है।

हनन्याह के पास यशायाह का उपदेश भी था, जिसने कई तरीकों से सिय्योन की परंपराओं को अपील की। यशायाह 17, पद 12 में क्या कहा गया है, इसे सुनें। और भजन 46 में जो चित्रण है, वही इस अंश में भी है।

यशायाह कहते हैं कि वे समुद्र की गड़गड़ाहट की तरह गरजते हैं। राष्ट्रों का क्रोध, ठीक भजन 46 की तरह। वे शक्तिशाली जल की गर्जना की तरह दहाड़ते हैं।

राष्ट्र बहुत से जल के गर्जन की तरह दहाड़ते हैं, लेकिन वह उन्हें डांटेगा और वे दूर भाग जाएंगे। हवा से पहाड़ों पर भूसी की तरह और तूफान से पहले धूल के गुबार की तरह भगाए जाते हैं। शाम के समय भय को देखो, लेकिन सुबह होने से पहले वे नहीं रहेंगे।

इसलिए, रात में हालात खराब हो सकते हैं, लेकिन सुबह होने से पहले, ये राष्ट्र जो यरूशलेम के खिलाफ क्रोधित और दहाड़ रहे हैं, भगवान हमें बचाने जा रहे हैं। और इसलिए, यह पुरानी धार्मिक परंपरा है कि हनन्याह यहां बहुत आसानी से अपील कर सकता था। वह इस कहानी की भी अपील कर सकता था कि कैसे भगवान ने 701 में यरूशलेम शहर को अशूरियों से बचाया था।

और प्रभु ने यह काम सचमुच नाटकीय तरीके से किया था। हमने इस बारे में कई बार बात की है। असीरियन सेना, 180,000 मजबूत, उन्होंने शहर को घेर लिया।

हिजकिय्याह परमेश्वर पर भरोसा रखता है। प्रभु का दूत आधी रात को निकलता है। और इसलिए, ये सभी चीजें हैं जहां हनन्याह कह सकता था, सुनो, अन्य भविष्यवक्ता भी हैं जिन्होंने तुमसे वही बातें कही हैं जो मैं तुमसे कह रहा हूँ।

आपको इस आदमी यिर्मयाह की बात क्यों सुननी चाहिए जो इस विनाश और निराशा के बारे में बात कर रहा है? ठीक है, हनन्याह के संदेश के बारे में कुछ और विशिष्ट बातें। 28.3 में, हिब्रू पाठ में, जब वह कहता है, दो साल के भीतर, मैं इस स्थान पर वापस लाऊंगा। पाठ वास्तव में क्या कहता है यह दो दिनों के भीतर, दो योम के भीतर था।

अब हम जानते हैं कि योम शब्द का मतलब हमेशा 24 घंटे का दिन नहीं होता है। और उत्पत्ति 1 में सृष्टि के दिनों में इसके बारे में एक बड़ी बहस है, शुक्र है कि मुझे यहाँ संबोधित करने की ज़रूरत नहीं है। योम एक समयावधि के लिए एक सामान्य शब्द हो सकता है, अर्थात् प्रभु का दिन।

लेकिन यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि वह केवल दो साल के भीतर नहीं कहते हैं। वह वास्तव में कहता है कि दो दिन के भीतर मैं वह स्थान वापस ले आऊंगा। अब, मुझे नहीं लगता कि यहां उनका शाब्दिक अर्थ 48 घंटे है, लेकिन यह कहने का एक मुहावरेदार तरीका है, देखो, बहुत ही कम समय में, भगवान अपने लोगों को बहाल करने जा रहे हैं।

28:11 हनन्याह ने जूए को तोड़ने के बाद उन से कहा, यहोवा यों कहता है, वैसे ही मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के जूए को दो ही दिन के भीतर अन्यजातियों की गर्दन पर से तोड़ डालूंगा।

ठीक है। तो, दो साल की भविष्यवाणी करना एक बात है, लेकिन इस मुहावरे का उपयोग दो दिन में करना, यार, छुटकारा वास्तव में जल्द ही आने वाला है।

फिर से, मुझे भविष्यवक्ताओं की पिछली धार्मिक परंपरा के आलोक में इस बारे में सोचना पड़ा। हनन्याह के पास एक प्रमाण पाठ था - एक अंश जिस पर वह जा सकता था।

होशे, जो यिर्मयाह का भविष्यवक्ता पूर्ववर्ती है, अध्याय छह, छंद एक और दो में, वह फैसले के बाद इज़राइल के लोगों की वापसी और बहाली के बारे में बात करने जा रहा है। और वह वहां जो कहने जा रहा है वह यह है, आओ और हम प्रभु के पास लौट आएं, क्योंकि उसने हमें फाड़ा है ताकि वह हमें चंगा कर सके। दो दिन बाद वह हमें पुनर्जीवित कर देगा।

तीसरे दिन, वह हमें जीवित करेगा ताकि हम उसके सामने जीवित रहें। तो हाँ, हमें न्याय से गुजरना पड़ सकता है, लेकिन थोड़े समय में, दो दिनों के भीतर या तीन दिनों के भीतर, परमेश्वर हमें पुनर्जीवित करेगा और हमें ऊपर उठाएगा। हनन्याह भी यही बात कह रहा है।

इसलिए, अगर मैं उस दिन यरूशलेम में उन लोगों में से एक हूँ, जहां एक पैगंबर जूआ पहने हुए है और दूसरा पैगंबर जूआ उतार रहा है, तो मैं इस बिंदु पर थोड़ा उलझन में हूँ। अंतर बताना मुश्किल है। अब, एक और बात है जो तनाव को बढ़ाती है।

हनन्याह के प्रति यिर्मयाह की प्रतिक्रिया भी थोड़ी असामान्य है। क्योंकि जब हनन्याह आगे आकर उसका जूआ तोड़ने की हिम्मत रखता है, तो मैं कल्पना कर सकता हूँ कि एक भविष्यवक्ता की सामान्य प्रतिक्रिया यह होती कि वह तुरंत गुस्से में उस आदमी के सामने आ जाता और उस पर अपनी उंगली उठाता। लेकिन सुनिए यिर्मयाह क्या कहता है।

अध्याय 28, पद 5. तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने याजक और सब लोगों के साम्हने हनन्याह भविष्यद्वक्ता से बातें की, और उस ने कहा, आमीन। क्या यह हो सकता है। भविष्यवक्ता के पक्ष का वचन सत्य हो।

और वह यहोवा के भवन के पात्रोंको और सब बंधुओंको बाबुल से इस स्थान में लौटा ले आए। यिर्मयाह, जब उसने यह सन्देश सुना, जब इस भविष्यवक्ता ने उसकी गर्दन पर से जूआ फाड़कर तोड़ दिया और यिर्मयाह के उपदेश को बाधित कर दिया, तो यिर्मयाह कहता है, आमीन। तुम्हें पता है, मैं भी वह देखना चाहूँगा।

आपका संदेश उस संदेश से बेहतर लगता है जिसका मैं प्रचार कर रहा हूँ। इसलिए, जब तक यिर्मयाह यहाँ व्यंग्यात्मक ढंग से नहीं बोल रहा है, यिर्मयाह एक वास्तविक इच्छा व्यक्त कर रहा होगा कि, वाह, हनन्याह, शायद भगवान ने तुम्हें मुझे बाधित करने के लिए भेजा है। लेकिन फिर हमें यिर्मयाह की पूर्ण प्रतिक्रिया देखने को मिलती है।

और यिर्मयाह लोगों को समझाने जा रहा है, हाँ, यह बहुत अच्छा होगा यदि परमेश्वर ऐसा करेगा। और हमेशा यह संभावना थी कि भगवान 11वें घंटे में कदम रख सकते हैं। लेकिन एक कारण है कि हनन्याह का संदेश इस विशेष समय के लिए गलत संदेश है।

यशायाह के दिनों में यह सही संदेश हो सकता है, लेकिन इस विशेष स्थिति में यह सही संदेश नहीं है। यिर्मयाह इसका कारण बताने जा रहा है। और वह इन लोगों की मदद करने जा रहा है जिन्हें इस बात से जूझना पड़ा कि कौन सा पैगम्बर कौन है।

काली शर्ट किसने पहनी है? यहाँ सफ़ेद शर्ट किसने पहनी है? अच्छा लड़का कौन है? बुरा आदमी कौन है? वह भविष्यवक्ता कौन है जो हमें सत्य बता रहा है? कौन नहीं है? यहां बताया गया है कि उन्हें इससे निपटने में क्या मदद मिलेगी। यिर्मयाह अध्याय 28, श्लोक 8 में कहता है, प्राचीन काल से आपके और मेरे पहले के भविष्यवक्ताओं ने कई देशों और बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध, अकाल और महामारी की भविष्यवाणी की थी। यिर्मयाह कहता है, ठीक है, आपको अपनी भविष्यवाणी परंपरा मिल गई है, लेकिन मेरी भी अपनी भविष्यवाणी परंपरा है।

मैं होशे और यहां तक कि आपके यशायाह, आपके भविष्यवक्ता के पास भी जा सकता हूँ; मैं अमोस जा सकता हूँ; मैं मीका के पास जा सकता हूँ। ऐसी परंपरा है कि भविष्यवक्ताओं ने युद्ध, अकाल और न्याय की घोषणा की है। जब कोई भविष्यवक्ता इसकी घोषणा करता है तो उसकी प्रतिक्रिया यह होती है कि उस चेतावनी को गंभीरता से लिया जाए।

अमोस कहते हैं, ईश्वर हमेशा, जब वह चलना शुरू करता है, तो ईश्वर अपने पैगम्बरों के माध्यम से बोलता है। और इसलिए, इसके परिणामस्वरूप, तुरही तब तक नहीं बजती जब तक प्रतिक्रिया देने के लिए कोई आपात स्थिति न हो। तो, यिर्मयाह का कहना है कि भविष्यवक्ताओं की एक भविष्यवाणी परंपरा है जो लगातार लोगों को न्याय और अकाल और युद्ध की चेतावनी देती है।

और उस समय करने योग्य उचित बात यह आकलन करना है कि क्या हम परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हैं। क्या हम वाचा की आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं? और यदि यहूदा इस समय ईमानदारी से ऐसा करेगा, और शांति के इन वादों पर आँख मूँदकर भरोसा करने के बजाय, यदि वे यह आकलन करेंगे कि वे ईश्वर के संबंध में कहाँ खड़े हैं, तो वे मूर्तियाँ देखेंगे, वे मूर्तिपूजा देखेंगे, वे देखेंगे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में विफलता। लेकिन शांति की इस झूठी विचारधारा ने उनके दिमागों को सच्चाई से अंधा कर दिया है। यिर्मयाह कहता है, देखो, जब कोई भविष्यवक्ता न्याय की बात कहता है, तो तुम उसे गम्भीरता से लेते हो।

ठीक है। अब, हनन्याह, जहाँ तक तुम्हारे लिए, श्लोक नौ, और जहाँ तक उस भविष्यवक्ता के लिए जो शांति की भविष्यवाणी करता है, जब उस भविष्यवक्ता का वचन पूरा होता है, तब यह ज्ञात हो जाएगा कि प्रभु ने वास्तव में भविष्यवक्ता को भेजा है। इसलिए, जब कोई भविष्यवक्ता न्याय की भविष्यवाणी करता है, तो हम इसे गंभीरता से लेते हैं और उसका आकलन करते हैं।

अगर कोई भविष्यवक्ता शांति का वादा करता है, तो हम उस संदेश पर तभी विश्वास करते हैं जब इसकी पुष्टि हो जाती है। और यिर्मयाह अध्याय 27 में झूठे भविष्यवक्ताओं के सामने यह चुनौती रखता है। ठीक है।

आप घोषणा कर रहे हैं, और आप घोषणा कर रहे हैं कि निर्णय कुछ ही समय में पूरा होने वाला है। खैर, समकालीन घटनाओं के संदर्भ में जो कुछ भी चल रहा है, वह इसके खिलाफ तर्क दे रहा है। निर्वासन की यह लहर के बाद लहर है, 605, पहला समूह, 597, दूसरा समूह ले जाया गया।

यहाँ हम 593 में हैं, और वे अभी भी मूल्यांकन कर रहे हैं। क्या परमेश्वर वास्तव में बाल के हाथों हमारा न्याय कर रहा है? यिर्मयाह कह रहा है, देखो, जब न्याय का एक भविष्यवक्ता तुम्हें चेतावनी दे रहा है, तो तुम समय निकालो और मूल्यांकन करो। यदि तुम इसके बारे में धार्मिक रूप से नहीं सोच सकते, तो बस देखो कि क्या हो रहा है। यदि कोई भविष्यवक्ता है जो इस बीच में कदम रखता है और शांति की भविष्यवाणी करता है, तो हम केवल तभी उस पर विश्वास करेंगे जब यह वास्तव में घटित होगा।

और वह पद 18 में झूठे भविष्यवक्ताओं से कहता है, यदि वे लोग वास्तव में भविष्यवक्ता हैं और यदि प्रभु का वचन उनके भीतर है, तो उन्हें सेनाओं के प्रभु से विनती करनी चाहिए, कि जो पात्र प्रभु के भवन में, यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं, वे बेबीलोन न जाएँ। ठीक है। वह कहता है, देखो, यदि वे सच्चे भविष्यवक्ता हैं और उन्हें लगता है कि यह संकट समाप्त होने वाला है, तो आइए हम उन्हें थोड़ा परीक्षण दें।

वे ईश्वर से प्रार्थना करें कि ईश्वर कुछ सरल कार्य करें। बस उन जहाजों को वापस लाओ जिन्हें 597 में नबूकदनेस्सर ने छीन लिया था। वे ऐसा भी नहीं कर सकते।

और किसी प्रकार की पुष्टि के बिना, जिन विनाशकारी परिस्थितियों से वे गुज़र रहे हैं और प्रभु की बार-बार की गई बेवफाई के प्रकाश में, इस बिंदु पर शांति के पैगंबर को सुनने का कोई कारण नहीं है। और मुझे लगता है कि अगर यिर्मयाह इस बहस में थोड़ा और शामिल होता, तो वह कह सकता था, देखो, अगर आप यशायाह के बारे में बात करना चाहते हैं, तो आइए यशायाह के बारे में बात करें। हनन्याह ऐसा है, मैं यशायाह के पास वापस जा सकता हूँ।

यशायाह ने यरूशलेम के उद्धार की भविष्यवाणी की और ऐसा हुआ। आप ठीक कह रहे हैं। शांति के पैगंबर को स्वयं की पुष्टि करनी होगी।

हाँ, लेकिन हमारे पास अभी भी यशायाह है। यिर्मयाह उस पुस्तक में वापस जा सकता था और कह सकता था कि भविष्यवक्ता यशायाह ने केवल तभी उद्धार का वादा किया था जब हिजकिय्याह ने परमेश्वर के वचन का सही तरीके से जवाब दिया था। और उस तरह की प्रतिक्रिया के बिना, कोई कारण नहीं है, शांति के आपके संदेश का कोई आधार नहीं है।

और इसलिए, लोग निश्चित रूप से यहाँ दुविधा में फँसे हुए हैं। आप जानते हैं, हम किस पर विश्वास करें? यिर्मयाह कहता है, परिस्थितियों के प्रकाश में, आपकी वाचा की बेवफाई के प्रकाश में, मैं भविष्यवक्ताओं की लंबी परंपरा में हूँ जिन्होंने विपत्ति और आपदा की चेतावनी दी है। और अतीत में, लोगों ने इसे गंभीरता से लेते हुए इसका जवाब दिया है।



अगर आप वाकई इस आदमी के संदेश पर यकीन करने जा रहे हैं, तो दो साल के अंदर यह सब खत्म हो जाएगा। आइए इसे दिखाने के लिए कुछ सबूत देखें। तो, यिर्मयाह आखिरकार, आप जानते हैं, आमीन, ऐसा होने दो।

लेकिन वह परमेश्वर का न्याय सुनाता है। और जो सजा हनन्याह पर पड़ने वाली है, वह बहुत गंभीर बात है। संदेश के प्रति उसके विरोध के कारण, यिर्मयाह यहाँ क्या कहता है।

राष्ट्र के लिए लकड़ी के जुए के स्थान पर जिसे तुमने तोड़ा है, परमेश्वर उसके स्थान पर लोहे का जुए रखने जा रहा है। देखो, तुम इन झूठे भविष्यवक्ताओं की बात सुनते हो, और यहाँ परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध क्या करने जा रहा है। हनन्याह के लिए व्यक्तिगत रूप से, यिर्मयाह यह कहता है।

हे हनन्याह, सुनो, यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा है। तुम जो भी भविष्यवाणियाँ करना चाहो, कर सकते हो, लेकिन यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा है। और तुमने इस लोगों को झूठ पर भरोसा करने के लिए मजबूर किया है।

इसलिए यहोवा यों कहता है, देख, मैं तुझे धरती के ऊपर से मिटा दूंगा। इसी वर्ष तू मर जाएगा, क्योंकि तूने यहोवा के विरुद्ध विद्रोह किया है। और यह हमें पद 17 में अंतिम वचन बताता है, उसी वर्ष, सातवें महीने में, भविष्यवक्ता हनन्याह की मृत्यु हो गई।

ठीक है, यहाँ विडंबना है। यहां वह सज़ा है जो अपराध के लिए उपयुक्त है। हनन्याह ने कहा था कि दो साल के भीतर संकट खत्म हो जाएगा।

वास्तविकता यह थी कि दो महीने के भीतर हनन्याह मर गया था। शांति के पैगम्बर जीवन का वादा कर रहे थे। वास्तविकता यह है कि यदि वे उनका अनुसरण करते हैं, तो उन्हें उसी मृत्यु का अनुभव होगा जो भविष्यवक्ताओं ने स्वयं अनुभव किया था।

हम यिर्मयाह अध्याय 29 में भविष्यसूचक संघर्ष के तीसरे उदाहरण पर जाते हैं। और फिर, मुद्दा बेबीलोन के प्रति समर्पण का है। अब, यहां विरोध का संदर्भ बदल जाता है, क्योंकि अब जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह का विरोध कर रहे हैं वे बेबीलोन में हैं।

तो, परमेश्वर के पास बेबीलोन में उसका सच्चा भविष्यवक्ता था। परमेश्वर के पास यहजेकेल था। भगवान के पास डैनियल था।

परन्तु परमेश्वर के पास भी थे, या लोगों के पास अपने झूठे भविष्यवक्ता भी थे। और वे शांति का ही संदेश दे रहे थे। ये ज्यादा दिन तक चलने वाला नहीं है।

ये कुछ ही देर में खत्म होने वाला है। यहां बेबीलोन में निर्वासितों के लिए यिर्मयाह का संदेश है। और वह उन्हें एक पत्र भेजता है, जैसा कि अध्याय 29 के आरंभिक भाग में कहा गया है।

और यहाँ वह है जो वह उनसे कहता है। सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, उन सब बंधुओं से जिन्हें मैं ने बाबुल में बंधुआ करके भेज दिया है, यों कहता है। घर बनाओ और उनमें रहो।

बगीचे लगाओ और उनकी उपज खाओ। पत्नियाँ ले लो और बेटे-बेटियाँ पैदा करो। अपने पुत्रों के लिये पत्नियाँ ले लो।

अपनी बेटियों का ब्याह करो, कि वे बेटे बेटियाँ उत्पन्न करें। वहाँ गुणा करें और घटाएं नहीं। परन्तु उस नगर की भलाई चाहो, जहाँ मैं ने तुम्हें बन्धुवाई में भेज दिया है, और उसके निमित्त प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करो।

क्योंकि इसके कल्याण में ही तुम्हारा कल्याण होगा, या तुम्हारे शालोम में ही, जो बाबुल के शालोम से आएगा। क्योंकि सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, तुम्हारे भविष्यद्वक्ता और तुम्हारे ज्योतिषी जो तुम्हारे बीच में हैं, वे तुम्हें धोखा न दें और उनके झूठे और खोखले वादों पर ध्यान न दें। तो, यहाँ यिर्मयाह का संदेश है।

यही बात वह उन लोगों से भी कह रहा था जो अभी भी उस देश में थे। बेबीलोन के अधीन हो जाओ। और निर्वासितों के लिए, इसका मतलब था कि उन्हें यह पहचानना होगा कि वे कुछ समय के लिए यहाँ रहने वाले हैं।

घर बसाओ। वही काम करो जो तुम आम ज़िंदगी में करते हो। अपना घर बनाओ, अंगूर के बाग लगाओ, अपनी फ़सल उगाओ और बच्चे पैदा करो।

और बाबुल ने, एक तरह से इन लोगों के लिए, वादा किए गए देश की जगह ले ली है। यह उनका वादा किया हुआ देश बन गया है। परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण 6 में इस्राएल से कहा था, मैं तुम्हें शहर, घर और दाख की बारियाँ दूँगा जिन्हें तुमने नहीं लगाया।

आप वादा किए गए देश में इन सभी चीजों का आनंद लेने जा रहे हैं। खैर, अब, अस्थायी रूप से, बेबीलोन उनकी वादा की गई भूमि बन गया है। यह वह जगह है जहाँ वे उन चीजों का अनुभव करेंगे जो इज़राइल के साथ भगवान की मूल व्यवस्था में वाचा के आशीर्वाद से जुड़े थे।

बच्चे हों। वहाँ बच्चे पैदा करो। बेबीलोन की शांति के लिए प्रार्थना करें।

क्या आपको वह भजन याद है जो हमें यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करने के लिए कहता है? बेबीलोन ने यरूशलेम का स्थान ले लिया है, और जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह बहुत ही विध्वंसक धर्मशास्त्र है।

यरूशलेम अब शालोम का शहर नहीं है। बेबीलोन है। और यदि आप वहाँ बस जाएंगे, और यदि आप बेबीलोन के अधीन हो जाएंगे और इन विचारों को छोड़ देंगे कि आप थोड़े समय के लिए वहाँ रहेंगे, तो प्रभु अंततः आपको बहाल करने जा रहे हैं।

ठीक है? यह वह सच्ची आशा है जो यहूदा के पास है, नबियों द्वारा दी जा रही झूठी आशाओं के विपरीत। और पद 11 में, या पद 10 में, जब बेबीलोन के लिए 70 वर्ष पूरे हो जाएंगे, तो मैं तुमसे मिलने आऊँगा, और मैं तुमसे किया अपना वादा पूरा करूँगा और तुम्हें इस स्थान पर वापस ले आऊँगा। ठीक है, शांत हो जाओ।

निर्वासन कुछ समय तक चलने वाला है। और यहाँ वह वादा है जो बहुत से लोग... यहाँ वह श्लोक है जिसे यिर्मयाह में बहुत से लोग जानते हैं... शायद यह एकमात्र श्लोक है जिसे यिर्मयाह में बहुत से लोग जानते हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे पास तुम्हारे लिए क्या योजनाएँ हैं, यहोवा की घोषणा है, कल्याण के लिए योजनाएँ और बुराई के लिए नहीं, तुम्हें एक भविष्य और आशा देने के लिए।

ठीक है? किसी और के वादों को अपने लिए मानने से सावधान रहें। यहाँ एक सामान्य वादा है कि परमेश्वर अपने लोगों के कल्याण और भलाई को ध्यान में रखता है। लेकिन यह पहचानें कि यह एक सामान्य वादा नहीं है कि जो लोग परमेश्वर को जानते हैं और उससे प्यार करते हैं, उन्हें कभी भी कठिनाई का अनुभव नहीं होगा।

कि प्रभु सदैव तुम्हें हानि से बचाएगा; यह वादा उन लोगों को दिया गया है जिन्हें पहले ही न्याय में छीन लिया गया है। यह वचन उन लोगों को दिया गया है जो पहले से ही निर्वासन में रह रहे हैं।

यह वादा उन लोगों को दिया गया है, जो कई मायनों में स्वयं आशीर्वाद का अनुभव नहीं करने जा रहे हैं। यह एक आशीर्वाद है जो उनके बाद उनके बच्चों को दिया गया है। एक समकालीन ईसाई लेखक ने यिर्मयाह 29 के बारे में कहा है कि यह अनुच्छेद हमें एक अद्भुत वादा देता है: जैसे ही हम ईश्वर के उद्देश्य के अनुसार अपना जीवन जीना शुरू करते हैं, हमारे जीवन में अद्भुत परिवर्तन होने लगते हैं।

ठीक है? मुझे लगता है कि रोमियों 8:28, भगवान सभी चीजों को एक साथ अच्छे के लिए काम करता है। लेकिन यह कोई वादा नहीं है कि एक आस्तिक के रूप में आप जो कुछ भी करेंगे वह सफल होगा। यह कोई सामान्य गारंटी नहीं है।

लोग फिलिप्पियों 4, पद 13 के साथ भी ऐसा ही करते हैं। मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ देता है। यह एथलीट की पसंदीदा कविता है।

यह हर किसी की टोपी, जूते या दस्तानों पर होता है। मैं सबकुछ करने में सक्षम हूँ। मैं नौवीं पारी में होम रन मार सकता हूँ।

लेकिन इन वादों को लेने में सावधानी बरतें जो एक विशिष्ट संदर्भ में हैं। यहाँ, यह इन निर्वासितों को दिया गया एक वादा है कि भगवान अंततः उन्हें न्याय और खतरे से बाहर लाएंगे। खैर, यिर्मयाह ने जो संदेश दिया, उसके धर्मशास्त्र की विध्वंसकता के कारण, भविष्यवक्ताओं के एक समूह ने उसका विरोध किया।

और अब भविष्यद्वक्ता हनन्याह और वे जो यहूदा में स्थित हैं, नहीं हैं। ये वे भविष्यद्वक्ता हैं जो बाबुल में बंधुओं के बीच हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख इस खंड में किया गया है।

उनमें से दो श्लोक 21 में हैं। सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, इन भविष्यद्वक्ताओं में से एक अहाब और सिदकिय्याह नामक दूसरे भविष्यद्वक्ता के विषय में यों कहता है। यह राजा नहीं है।

यह इसी नाम का एक भविष्यद्वक्ता है। वे मेरे नाम पर तुम से झूठी भविष्यद्वक्ताणी कर रहे हैं। वे होनहार थे।

देखना, थोड़ी देर में वनवास समाप्त हो जायेगा। यिर्मयाह ने कहा, हे सत्तर वर्ष, यहीं बस जाओ। ये भविष्यद्वक्ता उस संदेश से नफरत करते हैं क्योंकि वे शांति के खोखले वादे कर रहे हैं।

यिर्मयाह कहता है, सुन, मैं उन को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दूंगा, और वह उनको तेरे साम्हने मार डालेगा। उनके कारण यहूदा और बाबुल के सब बन्धुओं पर यह शाप पड़ेगा। यहोवा तुम्हें सिदकिय्याह और अहाब के समान बनाता है, जिन्हें बाबुल के राजा ने आग में भून डाला।

और किसी तरह से, नबूकदनेस्सर ने अंततः शांति के उनके वादों को तोड़फोड़ के रूप में देखा। और उसने उन्हें मार डाला। उसने उन्हें आग में भून लिया।

मैं चाहता हूं कि हम इस पर ध्यान दें। हनन्याह का क्या होगा? दो माह के भीतर उसकी मृत्यु हो जाती है। अहाब और सिदकिय्याह का क्या होगा? वे वादा कर रहे हैं, हे, प्रभु तुम्हें समृद्ध करेंगे, और सब कुछ ठीक हो जाएगा।

वे अपने संदेश के कारण मरते हैं। बहुत ही रोचक। शांति के पैगम्बर अंततः मृत्यु से जुड़े हैं।

वास्तविक जीवन उन भविष्यद्वक्ताओं का अनुसरण करने से आता है जो वास्तव में प्रभु के वचन बोल रहे हैं। यह कोई आसान संदेश नहीं है। यह ऐसा संदेश नहीं है जो फैसले के विचार को खारिज करता है, लेकिन शांति के खोखले वादे कभी भी अपने वादे पूरे नहीं कर पाएंगे।

आप इसे स्वयं पैगम्बरों के जीवन में देख सकते हैं। अंत में, आखिरी पैगंबर जिसका यहां उल्लेख किया गया है, शम्मैया। और शम्मैया, हनन्याह की तरह, भविष्यसूचक दर्पण के कार्य में संलग्न होने जा रहा है।

यिर्मयाह, इस प्रकार प्रभु कहता है, और वह यह व्यक्त करने के लिए एक पत्र लिखता है कि, शमायाह विपरीत दिशा में, यरूशलेम में धार्मिक नेताओं को एक पत्र लिखने जा रहा है और कहता है, अरे, यह आदमी, यिर्मयाह, जो निर्वासितों को बता रहा है उनका उद्धार नहीं होने वाला है, उन्हें बस यहीं बस जाना चाहिए। उस आदमी की निंदा होनी चाहिए। उसे जेल में डालना होगा।

और भविष्यसूचक दर्पण का यह पूरा संघर्ष फिर से चलता रहता है। किसकी बात टिकेगी? यिर्मयाह कहता है, शमायाह, क्योंकि उस ने झूठ कहा है, क्योंकि उस ने यहोवा का वचन नहीं दिया। यह व्यक्ति कभी भी पुनर्स्थापना के आशीर्वाद का अनुभव नहीं करेगा।

और इसलिए इस पूरे खंड में लगातार शांति के भविष्यवक्ता ही ये खोखली उम्मीदें पेश कर रहे हैं। लेकिन यिर्मयाह का संदेश ही जीवन देता है। यह एक ऐसा संदेश है जो कहता है कि आपको अपने पाप को पहचानने की ज़रूरत है।

आपको उस न्याय को पहचानने की ज़रूरत है जो परमेश्वर आप पर ला रहा है। और जब हम उसकी ओर लौटेंगे तो परमेश्वर अंततः हमें बहाल कर देगा। भविष्यवाणियों का संघर्ष, शांति के भविष्यवक्ता, और प्रभु के संदेशवाहक, परमेश्वर के सच्चे संदेशवाहक, यही इस खंड के बारे में है।

और इस संदेश के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में जो निर्णय लिया जाता है, यहूदा के नेता इस संदेश के बारे में अध्याय 37 से 39 में जो निर्णय लेने जा रहे हैं, हम देखेंगे कि यह पूरी तरह से जीवन और मृत्यु का मामला है, कि हम परमेश्वर के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण निर्णय, हमें यिर्मयाह की पुस्तक में लगातार याद दिलाया जाता है कि हम परमेश्वर के वचन को कैसे सुनते हैं। यह जीवन और मृत्यु का मुद्दा है।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 22, यिर्मयाह 27-29, भविष्यसूचक संघर्ष है।